Roll. No. :

S-3071

M.A. First Semester, Examination, 2024-25

Hindi

Paper Third

[मध्यकालीन सगुण एवं रीतिकालीन काव्य]

Time : 2:30 Hours] **[Maximum Marks : 80**

नोट : इस प्रश्न पत्र में दो खण्ड हैः खण्ड अ तथा ब। खण्ड अ तथा ब प्रत्येक से किन्हीं चार–चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के उत्तर दी गयी उत्तर पुस्तिका में ही दीजिए। अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका नहीं दी जायेगी।

खण्ड–अ

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

4 × 5 = 20

1. तुलसीदास के कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. भ्रमरगीत से क्या तात्पर्य है?

https://www.sdsuvonline.com

तज्यौ मनौ तारन–बिरदु, बारक बारनु तारि।।
जोग जुगति सिखए सबै, मनौ महामुनि मैन।
चाहत प्रिय अद्वैतता, कानन सेवत नैन।।

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) सुनहु विभीषन प्रभु कै रीति, करहिं सदा सेवक पर प्रीती।।
कहहु कवन में परम कुलीना, कपि चंचल सबही विधि हीना।।
प्रात लेइ जो नाम हमारा, तेहि दिन ताहि न मिलहि अहारा।।
अस मैं अधम सखा सुनु मोहूँ पर रघुवीर,
कीन्हीं कृपा सुमिरि गुन भरे बिलोचन नीर।।

(ख) कुंदन को रंगु फीको लगै, झलकै अति अंगन चारु गुराई
आँखिन मैं अलसनि, चितौन में मंजु बिलासन की सरसाई,
को बिन मोल बिकात नहीं, 'मतिराम' लहैं मुसकानि–मिठाई,
ज्यों–ज्यों निहारिए नेरे ह्वै नैननि, त्यौं–त्यौं खरी निकरै–सी निकाई।। https://www.sdsuvonline.com

3. तुलसी के काव्य में लोक मंगल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

4. "घनानन्द के काव्य में भावपक्ष तथा कलापक्ष की सफल अभिव्यक्ति हुई है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

5. बिहारी की काव्यकला का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

6. सूर में जितनी सहृदयता तथा भावुकता है उतनी ही चतुरता एवं वाग्वैदग्ध्यता भी है। आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं?

https://www.sdsuvonline.com

3. सुन्दरकाण्ड का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

4. पद्माकर के जगद्विनोद में सामाजिक अभिव्यक्ति को व्यक्त कीजिए।

5. कवि सेनापति की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।

6. घनानन्द को प्रेम की पीर का कवि क्यों कहा गया?

7. बिहारी के कलापक्ष को स्पष्ट कीजिए।

8. मतिराम की अलंकार योजना पर अपने विचार संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ब

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

4 × 15 = 60

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) काहे को रोकत मारग सूधो?

सुनहु मधुप! निर्गुन कंटक, तें राजपंथ क्यों रूँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यायधन जू धौ?
बेद पुरान सुमृति सब ढूँढौं, जुबतिन जोग कहूँ धौ?
ताको कहा परेखो कीजै, जानत छाछ न दूधे,
सूर मूर अक्रूर गए लै, ब्याज निबेरत ऊधौ।।

(ख) बहके सब जिय की कहत, ठौरु–कुठौरु लखैं न,
छिन औरौ छिन और से, ये छवि छाके नैन।।
नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।

https://www.sdsuvonline.com

7. मतिराम के साहित्यिक योगदान को रीतिकाल के परिप्रेक्ष में कैसे समझा जा सकता है?

8. भ्रमरगीत का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

****

https://www.sdsuvonline.com